Vol 5 Issue 11 August 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

## *Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

Review Of Research

# हिंदी प्रिंट मीडिया में भाषा का परिवर्तित स्वरूप (दैनिक जागरण और अमर उजाला के संदर्भ में)

डॉ. वीरेंद्र सिंह बर्त्वाल

*प्रस्तावना–*

भाषा मनुष्य के भावों को व्यक्त करने का सशक्त और प्रभावी माध्यम है। इसकी व्युत्पत्ति मानव जाति के साथ ही हो गई थी। मनुष्य ने भावाभिव्यक्ति के लिए सर्वप्रथम ध्वनियों का उपयोग किया और फिर शब्दों की सृष्टि कर डाली। धीरे–धीरे भिन्न–भिन्न शब्दों के योग और समन्वय से भाषा का ढांचा निर्मित हुआ। फिर उसके सुविधाजनक और सफल उपयोग के लिए सर्वमान्य नियम बनाए गए। आवश्यकताएं और संख्या बढ़ने से मानव विभिन्न कबीलों, समूहों, संगठनों, प्रांतों में बंट गया और इसी आधार पर इन समूहों की भाषाओं ने अलग–अलग रूप ले लिया।

भाषा से तात्पर्य किसी विशेष देश या जनसमाज में प्रचलित शब्दावली और उसे बरतने के ढंग से है।[1]

'भाषा' शब्द का संबंध 'भाष' : बोलनाः धातु से है अर्थात् 'भाषा' का शब्दार्थ है जिसे बोला जाए। किंतु मोटे रूप से उन सभी साधनों को भाषा कहते हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता या सोचता है। अध्यापक मेज पर हाथ पटककर विद्यार्थियों को चुप करा लेता है, रेलगाड़ी का गार्ड हरी झंडी दिखाकर ड्राइवर को ट्रेन चलाने का संकेत देता है, गूंगे आपस में हाथ के संकेतों से बात करते हैं।[2]

भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा–समाज के लोग आपस में विचार–विनिमय करते हैं।[3]

उपरोक्त आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने विचारों–भावनाओं–इच्छाओं को उनके निर्गत स्थान अर्थात् दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाता है। भाषा के लिखित और मौखिक दो स्वरूप होते हैं। भाषा वाक्यों का ढांचा होती है, वाक्य शब्दों से, शब्द वर्णों के योग से अस्तित्व में आते हैं। मौखिक भाषा का का दूसरा नाम वाणी भी कहा जाता है। वाणी से आशय मनुष्य के मुख से निकलने वाली ध्वनियों के एक क्रमबद्ध–सुसंगठित स्वरूप से है। अर्थात् शब्द और वाक्य।

वाणी का अर्थ है–भाषण, वचनध्वनि और बोलने की शक्ति। वाणी वरदान है। इसकी निष्पति वण् धातु के साथ इण् तथा ङीप प्रत्य के योग से हुई। विद्वानों ने वाणी के चार रूप बताये हैं–परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी। इसके तीन रूप तो अव्यक्त हैं। चौथा रूप 'वैखरी' ही शब्द के माध्यम से मनुष्य के मुख से बाहर निकलती है।[4]

कालांतर में भाषाओं का स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। सभ्यता और मानव की विकास यात्रा के साथ भाषा का न केवल विकास हुआ, अपितु उसकी संख्या में भी वृद्धि हुई है।

संसार में कुल लगभग तीन हजार भाषाएं बोली जाती हैं। इनमें बहुत–सी भाषाएं पारिवारिक रूप से आपस में संबद्ध हैं, अर्थात् वे मूलतः किसी एक भाषा से ही निकली हैं।.....हिंदी का संबंध भारोपीय परिवार से है।[5]

जिस हिंदी भाषा का हम प्रयोग करते हैं, उसका मूल आर्यों से जुड़ा है। यह आधुनिक आर्यभाषा के अंतर्गत आती है। सिंधी, पंजाबी, लहंदा, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमी और उड़िया भी हिंदी की ही तरह आर्यभाषा परिवार की हैं।

आज की हिंदी अर्थात् हिंदुस्तानी या खड़ी बोली वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के विकास पड़ाव पार करते हुए यहां तक पहुंची है। हिंदी भाषा की उत्पत्ति मूल रूप से शौरसेनी अपभ्रंश से हुई मानी गई है। इसकी लिपि देवनागरी है।

हिंदी में साहित्य लेखन का इतिहास लगभग लगभग हजार वर्ष पुराना है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन इस प्रकार किया है– आदिकाल अथवा वीरगाथा काल संवत् 1050–1375, पूर्व मध्यकाल अथवा भक्ति काल संवत् 1375–1700, उत्तर मध्य काल अथवा रीतिकाल संवत् 1700–1900 तथा आधुनिक काल अथवा गद्य काल संवत् 1900–1984।[6]

हिंदी के वर्तमान स्वरूप में साहित्य लेखन लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है। हिंदी के इस स्वरूप में न केवल पर्याप्त रूप में कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं का लेखन हुआ, अपितु प्रिंट मीडिया अर्थात् समाचार पत्रों की भी यही भाषा है।

हिंदी भाषा और सहित्य का इतिहास तो हजार बरसों के आर–पार फैला हुआ है, किंतु जिस खड़ी बोली हिंदी के रूप में उसका कायाकल्प हुआ, उसका रचनात्मक इतिहास कुल डेढ़ेक सौ वर्ष का होगा। जहां उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक हमारे पास गद्य के नाम पर लगभग कुछ नहीं था, वहां देखते–देखते निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रावृत्त,डायरी और पत्र साहित्य सभी क्षेत्रों में विपुल और वैविध्यभरी फसल खड़ी कर देने का श्रेय उसे हासिल है।[7]

प्रिंट मीडिया में जिस हिंदी भाषा का प्रयोग होता है, वह प्रयोजनमूलक हिंदी कहलाती है। इस हिंदी का प्रयोग हम आनंद के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए करते हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी को अंग्रेजी में 'फंक्शनल हिंदी' के नाम से जाना जाता है। इसे 'कामकाजी हिंदी', 'हिंदी कार्मिकी', 'व्यावसायिक हिंदी' आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है। 'प्रयोजनमूलक हिंदी' इसका बहु प्रचलित नाम है।[8]

हिंदी भाषा के विकास, स्वरूप परिवर्तन और प्रचार–प्रसार में प्रिंट मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके पीछे यद्यपि मीडिया एजेंसियों के अपने निजी लाभ रहे

हों, किंतु यह बात सत्य है कि आज हिंदी में अनेक नए शब्दों का आविष्कार और प्रचलन इसी प्रिंट मीडिया की देन है। अपने समाचार पत्र के अधिकाधिक प्रसार के दृष्टिकोण से ये अखबार पाठकों के बीच पैठ बनाते हैं। इसके लिए वे पाठकों की सुविधानुसार भाषा परोसते हैं। वे ऐसे स्थानीय शब्दों का प्रयोग करते हैं,जो हिंदी में प्रचलित नहीं हैं, लेकिन संबंधित प्रदेशों–क्षेत्रों में रहने वाले बाहरी लोग भी उनका अर्थ सरलता से समझते हैं। हिमाचल के समाचार पत्रों में नदी के लिए 'खड्ड' और उत्तराखंड के अखबारों में छोटी नदी या हल्की गहरी घाटी के लिए 'गधेरे' शब्द का प्रयोग होता है।

समाचार पत्रों में आंचलिक शब्दों के प्रयोग के पक्षधर पत्रकार अमरेंद्र कुमार भी हैं। उनके अनुसार–मैं जब दिल्ली से प्रकाशित 'राष्ट्रीय सहारा' के हरियाणा संस्करण का प्रभारी था तो भाषा को लेकर बड़ी मुश्किल पैदा हो रही थी। हरियाणा संवाददाता कभी–कभी ऐसे आंचलिक शब्दों का प्रयोग करते थे, जिनका प्रयोग मेरी दृष्टि से उचित नहीं था। पहले तो मैंने उन शब्दों को बदलना शुरू किया, लेकिन बाद में मैंने विचार किया कि हरियाणा संस्करण में अगर वहां के ही शब्द जाएं, तो अन्य प्रदेशों को उचित नहीं लगने के बावजूद उचित होगा, क्योंकि यह संस्करण तो केवल हरियाणा में ही जाता है।[9]

समाचार पत्र नए शब्दों को गढ़ते हैं और जनसामान्य तक इनके पहुंचने के कारण ये प्रचलन में भी आ जाते हैं। कई बार समाचार अपनी सुविधानुसार भाषा के मानक बना लेते हैं। प्रिंट मीडिया में कंप्यूटरीकरण के पश्चात् समाचार पत्रों ने अनुनासिकों–ङ.,ण, न, म को लेखन से लगभग हटा ही दिया है। इनके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग ही किया जाने लगा, किंतु प्रत्येक अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग कई बार उच्चारण को विकृत बना देता है। विशेषतः अंग्रेजी में जहां 'एन' अक्षर का प्रयोग होता है। जैसे कान्फ्रेंस के स्थान पर कांफ्रेस, कन्फर्म की जगह, कंफर्म। इसी प्रकार अनुनासिक हटाकर प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी के शब्द 'पेंशन'[10] का उच्चारण भी विचित्र हो जाता है।

'डॉक्टर' और 'ऑफिस' जैसे अंग्रेजी शब्दों में चंद्र चिह्न के प्रयोग को लेकर समाचार पत्रों में एकरूपता नहीं है। दैनिक जागरण के प्रथम पृष्ठ के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित एक समाचार में डॉक्टर में इस चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है। : केंद्र से नहीं मिल रहा सहयोगः जबकि इसी अंक के 15 नंबर पृष्ठ पर एक समाचारः महिला से रुपये लेने वाले डॉक्टर का इस्तीफाः में इसका प्रयोग किया गया है।[11]

समाचार पत्रों से क़, ग़, ज़, फ़, के नीचे लगने वाले नुक्ते लगभग समाप्त ही हो गए हैं। सुविधा की दृष्टि से यद्यपि यह बड़ी बात नहीं है, लेकिन उच्चारण की दृष्टि से यह ठीक नहीं है। कुछ शब्दों के अर्थ उच्चारण के कारण बदल जाते हैं। जैसे ज़रा का अर्थ थोड़ा और जरा का अर्थ बुढ़ापा होता है। इसी प्रकार कलम का अर्थ है– एक प्रकार का धान, चोर, बदमाश, जबकि क़लम का अर्थ होता है–काटना या लेखनी।

समाचार पत्रों में कुछ शब्दों के सही रूप प्रकाशित न होने से पाठक उस गलत रूप को ही सही मान बैठकर वैसा ही प्रयोग करने लगते हैं। 'तत्त्व' इस शब्द का सही रूप है, लेकिन इसका प्रयोग गलत लिख दिया गया है–तत्व। अमर उजाला के पांच नंबर पृष्ठ पर एक समाचार और उसके शीर्षक में 'पंचतत्व' शब्द लिखा गया है।[12]

इसी प्रकार इसी समाचार पत्र के पृष्ठ–4 में 'बिंदु से झलक उठी असम की संस्कृति' नामक समाचार में एसोसिएशन की जगह पर ऐसोसिएशन, पुरुषों के स्थान पर पुरूषों और प्रज्ज्वलन के स्थान पर प्रज्वलन लिखा गया, जो वर्तनी की दृष्टि से गलत है।[13]

दैनिक जागरण में एक समाचार का शीर्षक था–'गीत संगीत पर छात्रों संग झूमें दर्शक'। झूमे के 'मे' में बिंदु लग जाने के कारण यह वाक्य आदेशात्मक हो गया, जबकि यह घटना अथवा कार्यक्रम के समाचार का शीर्षक है।[14]

पत्रकारिता को जल्दी में लिखा गया तीसरे दर्जे का साहित्य कहा जाता है। इसमें समाज में घटित उन घटनाओं की अभिव्यक्ति या उद्घाटन होता है, जिनका संबंध किसी न किसी वर्ग से होता है। यह ऐसा प्रभावी और सशक्त माध्यम है, जो हमारे समाज की नित्य घटनाओं और प्रसंगों को रोचकता से परोसता है। यह माध्यम न केवल वर्तमान का प्रतिबिंबन करता है, बल्कि लोगों को जागरूक भी करता है। साहित्य और पत्रकारिता में एक बड़ा अंतर यह है कि साहित्य में प्रमुख तत्त्व कला होता है, जबकि पत्रकारिता में यथार्थ का आधिक्य होता है। साहित्य और पत्रकारिता एक पेड़ की दो शाखाएं हैं, दोनों में शैली का अंतर ही मूल है। पत्रकारिता की कला से समाज के लगभग अधिकांश वर्ग लाभान्वित होते हैं, अस्तु इसमें ऐसी भाषा का प्रयोग पत्रकारों की विवशता है, जिसे हर वर्ग समझ–बूझ सके, किंतु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि समाचार पत्र भाषा के मामले में अपने निजी मानक गढ़ लें। इस स्थिति में मध्य मार्ग का विकल्प बनता है कि समाचार पत्रों में भाषा का सरलीकरण और परिवर्तन अवश्य हो, किंतु उनमें व्याकरण आदि नियमों का पालन अनिवार्य रूप से हो। भाषा में प्रगति और प्रचार–प्रचार के दृष्टिगत परिवर्तन आवश्यक है, अतः समाचार पत्रों से अपेक्षा है कि मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखाओं में बंधे रहते हुए भाषा को पाठकों के योग्य बनाएं। भाषा–वर्तनी में एकरूपता बनाए रखना भी समाचार पत्रों का दायित्व होना चाहिए, अन्यथा पाठक भ्रमित हो जाता है। इस स्थिति में न केवल समाज में भाषा का विकृत रूप सामने आता है, अपितु समाचार पत्रों की विश्वसनीयता का ह्रास भी होता है।

———————————

1.वृहत हिंदी कोशः कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, पृ.842
2.भोलानाथ तिवारीः भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिंदी भाषा पृ.15
3. वही वही पृ.16
4.शिवराज सिंह रावत 'निसंग': भाषा तत्त्व और आर्य भाषा का विकास, पृ.17
5. डॉ. भोलानाथ तिवारीः हिंदी भाषा, पृ.7
6.आचार्य रामचंद्र शुक्लः हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.15
7. रमेशचंद्र शाह, हिंदी भाषाः सर्जनात्मक परिदृश्य : हिंदी की विकास यात्रा और हिंदी सेवी संस्थाएंः पृ.28
8. डॉ. एस.डी. तिवारीः जीविकोपार्जन के साधन एवं रोजगार की संभावनाः वृद्धि में प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता , पृ.55 : सम्मेलन पत्रिका, भाग : 95, संख्या–4, अक्टूबर–दिसंबरः सन् 2010
9.अमरेंद्र कुमारः पत्रकारिताः विधाएं और आयाम, पृ.8 : भूमिकाः
10.अमर उजाला, देहरादून संस्करण, पृ.4 देहरादून संस्करण : चुनावों में उम्मीदवार उतारेंगे पूर्व सैनिकः
11.दैनिक जागरण, देहरादून संस्करण, 19 अप्रैल, 2011
12. अमर उजाला, देहरादून संस्करण, 25 अप्रैल, 2011
13. अमर उजाला, देहरादून संस्करण, 24 अप्रैल, 2011
14.दैनिक जागरण, देहरादून संस्करण, 1 मई, 2011

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org